



माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

प्रियंका पांडेय

शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

डॉ शालिनी पांडे

प्रोफेसर, जैन कॉलेज, ग्वालियर मध्य प्रदेश।

Paper Received On: 21 AUG 2026

Peer Reviewed On: 25 SEPT 2026

Published On: 01 OCT 2026

Abstract

का हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जागरूक, उत्तरदायी एवं सक्षम नागरिकों का निर्माण करती है, जो समाज की प्रगति में सक्रिय योगदान देने में समर्थ हों। इसमें औपचारिक, अनौपचारिक तथा गैर-औपचारिक शिक्षा शामिल होती है, जिनमें से प्रत्येक बौद्धिक विकास, नैतिक परिपक्वता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आमतौर पर लोग भौतिक वातावरण को अन्य वातावरण की अपेक्षा अधिक महत्व देते हैं जबकि व्यक्ति के जीवन में मनोवैज्ञानिक वातावरण जैसे विद्यालय वातावरण (शिक्षक, प्राचार्य, प्रशासक, नीति निर्माता, विद्यार्थी एवं अन्य कर्मचारी गण) एवं गृह वातावरण (जिसमें माता-पिता, मित्र मंडली परिवार के अन्य सदस्य आते हैं) विद्यार्थियों को स्वयं को विकसित करने में सहायक होते हैं। शोधार्थी ने उद्देश्य के रूप में 1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की गृह वातावरण की स्थिति का अध्ययन करना। 2. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का अध्ययन करना एवं परिकल्पना के रूप में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के गृह वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। न्यादर्श हेतु आकस्मिक चयन विधि द्वारा शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया साथ ही यादृच्छिकी विधि के अंतर्गत टिपट प्रणाली के द्वारा 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि यौन भेद के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के गृह वातावरण में सार्थक अंतर है।

1. प्रस्तावना

मानव जब से धरती पर आया है तब से वह निरंतर कुछ ना कुछ अपने वातावरण से सीख ही रही है। जब बालक जन्म लेता है तब वह सबसे पहले पारिवारिक सदस्य एवं माता-पिता द्वारा निर्मित वातावरण, उसके जीवन पर शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति तो करते ही है जिससे उसके सर्वांगीण विकास में अत्यंत सहायक होती है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बालक के विकास की कोई भी अवस्था चाहे वह शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था प्रत्येक अवस्था में घर के वातावरण का अच्छा एवं बुरा दोनों ही प्रभावित करते हैं। बोस्ट.(1999) ने स्पष्ट किया कि घर वह स्थान है जहां बच्चे अनुभव प्राप्त करने के साथ-साथ बाहरी वातावरण से लिए गए अनुभवों को घर में वापस लेकर आते हैं। बालकों के लिए शेर की तरह यह एक मांद है, जहां वह स्वयं को सुरक्षित एवं स्वयं को निखारने का वातावरण प्राप्त करता है। इसलिए जब वही बालक समाज में प्रवेश करता है, तो उसके व्यवहार के आधार

पर कहा जाता है कि यह अच्छे घर का है या नहीं। राना, बिपाशा एवं चौधरी, गरिमा.(2017) ने माता-पिता का रवैया बच्चों के नैतिक विकास को विशेष रूप से प्रभावित करता है, मेडिगन व उनके साथियों.(2019), नील स्टार्क एवं मैटिर.(2018) ने अभिभावकीय शैली का विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया। ज्ञानानी.(2003) ने निष्कर्षस्वरूप छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव कम पड़ता है तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव अधिक पड़ता है। कुछ शोध अध्ययन ने परिणामस्वरूप यह पाया कि छात्रों का छात्राओं की तुलना में गृह वातावरण उच्च है, कुछ शोध में अध्ययन में छात्राओं का गृह वातावरण छात्रों की तुलना में उच्च पाया गया। इस प्रकार विरोधाभासी परिणाम प्राप्त होने के कारण शोधार्थी के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि ग्वालियर शहर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं का गृह वातावरण की स्थिति किस प्रकार की है एवं दोनों समूह में से किसका गृह वातावरण किस प्रकार का है इस तथ्य की जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधार्थी ने “माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के गृह वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना”। शीर्षक पर शोध अध्ययन करने का निश्चय किया है।

2. समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के गृह वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक स्तर

कक्षा 6 से 10 तक की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा में शामिल किया गया है। कक्षा 6 से कक्षा 8 की शिक्षा को उच्च प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है, जिसे 6 साल से 14 साल तक की आयु के बालक एवं बालिकायें ग्रहण करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा

प्राथमिक स्तर से तात्पर्य विद्यालय शिक्षा के उस स्तर से है, जिसमें समान्यतः 12 से 13 वर्ष आयु के बालक-बालिकाएं, खेल एवं विभिन्न क्रियाओं के द्वारा सहज औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं।

विद्यार्थी

शिक्षा कोष (1998) के अनुसार “शिक्षा के किसी स्तर पर व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करने के लिये नामांकित व्यक्ति को शिष्य या विद्यार्थी भी कहते हैं”।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध के सन्दर्भ में 12 वर्ष या 13 वर्ष आयु वर्ग बालक-बालिकाओं द्वारा जो किसी संस्था द्वारा संचालित औपचारिक शिक्षा को ग्रहण करते हैं, को विद्यार्थी के रूप में चिन्हित किया गया है।

गृह-वातावरण

पांडे, शालिनी.(2021) के अनुसार “गृह वातावरण से तात्पर्य है बालक के समायोजन एवं सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा संज्ञानात्मक) हेतु वांछित कौशलों में प्रवीण बनने हेतु अनौपचारिक एवं औपचारिक क्रियाकलापों को सीखता है”।

कार्यात्मक परिभाषा

गृह वातावरण से तात्पर्य है ऐसा वातावरण जो बालक के संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक विकास में सहायक हो तथा उनमें अवसाद, चिंता एवं कुसमायोजन जैसे तत्व को कम कर सके।

विद्यालय वातावरण

नन के अनुसार, “विद्यालय को मुख्य रूप से इस प्रकार का स्थान नहीं समझा जाना चाहिए, जहां किसी निश्चित ज्ञान को सीखा जाता है, बल्कि ऐसा स्थान जहां बालकों को क्रियाओं के उन निश्चित रूपों में प्रशिक्षित किया जाता है, जो इस विशाल संसार में सबसे महान और सबसे अधिक महत्व वाली हैं”।

कार्यात्मक परिभाषा

विद्यालयी वातावरण का अभिप्राय उन भौतिक, शैक्षिक व प्रेरणात्मक परिस्थितियों से है, जिनमें विद्यार्थी की क्षमताओं का पूर्ण एवं उचित विकास होता है।

शैक्षिक उपलब्धि

एनेस्टासी (1961) के अनुसार “शैक्षिक उपलब्धि वह आकलन है जो छात्रों के शिक्षा संबंधी निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार उद्देश्यों की प्राप्ति में दिखाई देता है। जिसका परिणाम उनकी परीक्षा में किए गए अंकों से होता है”।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का आशय ग्वालियर शहर के माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा-8वीं की परीक्षा के परिणाम में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का समग्र योग है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों कि विद्यार्थियों की गृह वातावरण की स्थिति का अध्ययन करना। माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. अध्ययन की परिकल्पना

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

6. न्यादर्श चयन विधि

इस शोध के संदर्भ में शोधार्थी ने आकस्मिक चयन विधि द्वारा शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया साथ ही यादृच्छिकी विधि के अंतर्गत टिपट प्रणाली के द्वारा विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का चयन किया गया।

7. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर शहर के शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 8 के 800 विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का चयन किया गया।

8. . शोध में प्रयुक्त उपकरण

गृह वातावरण के मापन हेतु शर्मा रीना एवं निगम विभा.(2017) द्वारा निर्मित गृह वातावरण मापनी का प्रयोग किया गया।

9. सांख्यिकी प्रविधि

प्रस्तुत शोध के निमित्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु एस.पी.एस.एस सॉफ्टवेयर द्वारा वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रविधि मध्यमान, मानक विचलन, विषमता, कुकदता, मध्यांक, प्रथम चतुर्थांश, तृतीय चतुर्थांश एवं निर्वचनात्मक सांख्यिकी प्रविधि

धि टी-मान ज्ञात किए गए।

10. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 माध्यमिक विद्यालय की विद्यार्थियों की गृह वातावरण की स्थिति का अध्ययन करना।

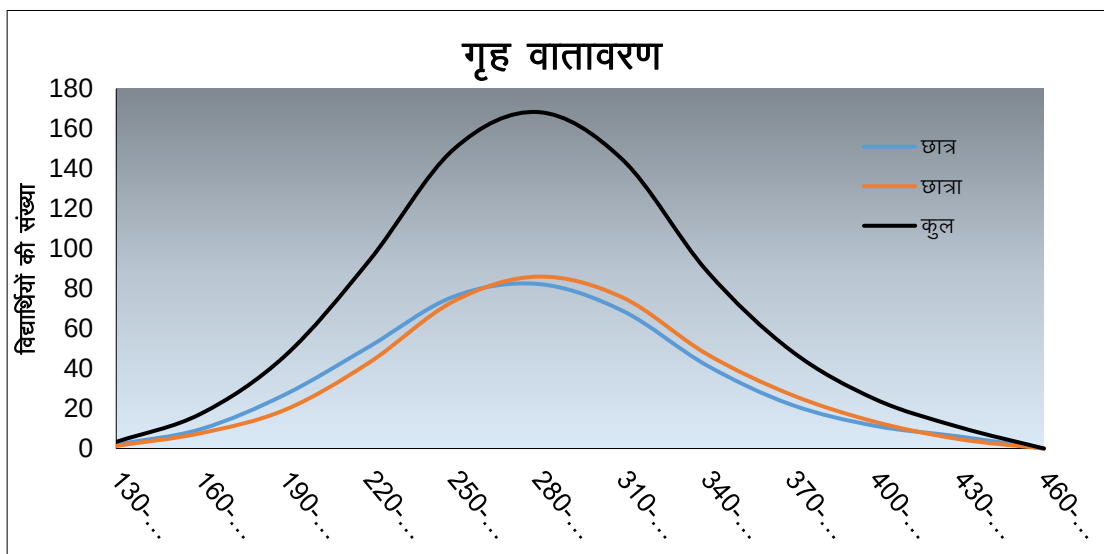
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं एवं विद्यार्थियों के गृह वातावरण की स्थिति का अध्ययन करने हेतु गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों से आवृत्ति वितरण एवं सरलीकृत आवृत्ति वक्र का निर्माण किया गया जो कि तालिका क्रमांक 1 एवं आरेख संख्या 1 में प्रस्तुत किया गया है

तालिका संख्या 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के गृह-वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

गृह वातावरण						
वर्ग अंतराल	छात्र			छात्रा		
130-160	0	6	2.00	0	4	1.33
160-190	6	29	9.67	4	23	7.67
190-220	23	81	27.00	19	58	19.33
220-250	52	153	51.00	35	129	43.00
250-280	78	228	76.00	75	221	73.67
280-310	98	247	82.33	111	258	86.00
310-340	71	207	69.00	72	227	75.67
340-370	38	125	41.67	44	142	47.33
370-400	16	66	22.00	26	81	27.00
400-430	12	34	11.33	11	40	13.33
430-460	6	18	6.00	3	14	4.67
460-490	0	0	0.00	0	0	0.00
	400			400		

उपर्युक्त तालिका 1 का गहन अवलोकन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि छात्र, छात्राओं एवं कुल विद्यार्थियों की अधिकांश आवृत्तियां 98, 111, 209 वर्ग अंतराल 280 से 310 के मध्य स्थित है।



तालिका संख्या 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र, छात्राओं के गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का विवरणात्मक सांख्यिकी मान

	छात्र	छात्रा
संख्या	400	400
मध्यमान	286.7	294.97
मानक त्रुटि	2.72	2.73
प्रथम चतुर्थांश	246	258
तृतीय चतुर्थांश	321	334
प्रा.वि	54.75	52.21
विकृति मान	0.26	0.24
	.122	.122
कुक्कदता मान	-0.20	0.17
	.243	.244
मध्यांक	293	289

उपर्युक्त तालिका 2 में दर्शाए गए छात्र छात्राओं का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमश 286.7, 294.97 प्राप्त हुआ। इसी प्रकार प्रमाणिक विचलन मान 54.75 एवं 52.21 पाया गया। मध्यांक 293 एवं 298 प्राप्त हुआ। प्रथम चतुर्थांश विचलन 256 एवं, 258 प्राप्त हुआ। तृतीय चतुर्थांश विचलन 321 एवं 334 प्राप्त हुआ। गृह वातावरण के परिप्रेक्ष्य में छात्रों में कुक्कदता(.260) दिखाई दे रही है। जो कि जार्ज एवं मिलर (2010) के अनुसार (2 से – 2) के मध्य स्थित है तो सामान्य वितरण की ओर इंगित करता है प्राप्त अंकों में निहित विषमता 0.260 का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य वितरण की ओर इंगित करता है जबकि छात्राओं में थोड़ी सी विकृति (0.24) एवं कुक्कदता (0. 17) दृष्टिगोचर हो रही है जो कि जार्ज एवं मिलर (2010) के अनुसार (2 से –2) के मध्य में है जो कि सामान्य वितरण की ओर इंगित कर रही है। इसी प्रकार छात्राओं की गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का विषमता मान

0.24 मानक त्रुटि .122 का 1.96 गुना अर्थात .2399 प्राप्त हुआ जो कि 1.96 से कम है अतः प्रसामान्य वितरण सामान्य है। इसी प्रकार कुलमार्गव सांख्यिकी में प्राप्त मान 0.059 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इसी प्रकार छात्राओं की गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का विषमता कुलमार्गव सांख्यिकी द्वारा प्राप्त 0. 067, मुक्तांश 400 पर .000 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर सार्थक है अर्थात प्रसामान्यता के विभिन्न नियमों की जांच के आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्रों एवं छात्राओं का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का वितरण सामान्य है।

उद्देश्य 2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं का गृह वातावरण एक समान है या अंतर होता है, इस तथ्य की जानकारी करने हेतु छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों की गणना कर तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका संख्या 2

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी-मान एवं सार्थकता स्तर।

प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
छात्र	400	286.7	54.39	2.11	0.05 सार्थक है।
छात्रा	400	294.97	52.21		

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 के गहन अवलोकन से विदित हो रहा है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान 286.7 एवं छात्राओं का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान 294.7 प्राप्त हुआ, साथ ही छात्रों का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन मान 54.39 एवं छात्राओं का गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन मान 52.21 प्राप्त हुआ। दोनों समूह के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु टी-मान ज्ञात किया गया। प्राप्त टी-मान 2.12 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना “माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।” को अस्वीकार किया जाता है। उक्त तथ्य की पुष्टि बापट, विवेक एवं तिवारी, वेद.(2025) ने शोधोपरान्त पाया गया कि छात्र-छात्राओं के गृह वातावरण में सार्थक अंतर होता है से हो रही है।

11. निष्कर्ष

1. शोधार्थी द्वारा चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र, छात्राओं का गृह वातावरण संबंधी औसत प्राप्तांकों का वितरण सामान्य है।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के गृह वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का टी-मान 2.11 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Arora, Santosh (1991). *A Study of the Relationship between Students Home Environment and Academic Achievement. Unpublished M.Ed. Short Thesis, Dayalbagh Educational Institute (Deemed University). Agra.*

बापट, विवेक एवं तिवारी, वेद(2025) प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर गृह वातावरण, परिवार के प्रकार एवं विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्य प्रदेश।

Devi ,Bindu & Sharma, Manju.(2021). *A Comparative Study of the Adjustment of Secondary School students. ilkogretim online,-Elementary Education Online, 20(3), 3053-3060. Doi: 10.17051/ilkonline.2021.03.15.*

Rani, Sarla. et.al (2023). *A Study of Academic Achievement of Secondary School Students in relation Self Concept. The International Journal of Indian psychology, 11(2). DOI: 10.25215 /1102.280*

Mohanraj., & Lalita (2005). *Perceived Family Environment in relation to Adjustment and Academic of Applied Psychology*,31,18-23.

पांडे, शालिनी एवं गुप्ता, रचना (2022). गृह वातावरण का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पांडे, शालिनी एवं सतभैया, नितिन कुमार(2023). सहरिया जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश।

Saha,k.(2005).*The Influence of school Environment on Cognitive Development of Children. journal of All India Association for Educational Research*,17(1-2),58-59.

Sathe, Neha and Varghese,Usha.(2020). *A study of adolescent adjustment and scholastic performance of secondary school students and need for social work intervention. Bhartiya Vidyapeeth deemed University*

Tiwari, Manjari and Pawar, Sangeeta (2025). *A study on home environment and mental health status among female secondary school students. Asian journal of education and social studies*,51(5),85-91.